International Journal of Applied Research 2021; 7(2): 51-53

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(2): 51-53
www.allresearchjournal.com
Received: 16-12-2020
Accepted: 09-01-2021

डॉ. विश्वासी एक्का
सहा. प्राध्यापक – हिन्दी
शास. राजमोहिनी देवी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. विश्वासी एक्का
सहा. प्राध्यापक – हिन्दी
शास. राजमोहिनी देवी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ,
भारत

लोककथाओं में लोकगीतों का संयोजन एवं स्त्री चेतना का स्वर

डॉ. विश्वासी एक्का

सारांश
लोक कथाएँ हमारी प्राचीन धरोहर है हमारा आदि साहित्य है इनमें हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति सभ्यता और इतिहास समेकित है | लोक कथाओं में लोक जीवन की झांकी इनमें लोगों के सुखों ,दुखों की अभिव्यक्ति होती है साथ ही ये मनोरंजन के साथ श्रम का परिहार भी करते हैं| मनुष्य प्रारंभ से ही कल्पनाशील रहा है अपनी इसी कल्पनाशीलता के कारण वह अपने आसपास की घटनाओं और यथार्थ को लोक कथा के रूप में कहने लगा | लोककथाएँ विश्व की हर भाषा में होते हैं | भारतीय आदिवासी और ग्राम्य जीवन में लोक कथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है | ये संस्कृति की वाहक होती हैं वे संस्कृति की अनेकानेक तत्वों को एक पीढ़ी से दूसरी तक हस्तांतरित करती हैं | कुछ लोक कथाएँ अपने अंचल विशेष में कही सुनी जाती हैं कुछ अपने अंचल से निकल कर लोक जीवन तक पहुंचती हैं तो कुछ लोक कथाएँ थोड़े परिवर्तन के साथ विश्वव्यापी हो जाती हैं | लोक कथाओं में लोक गीतों का संयोजन उसे और सरस बना देता है |
आधुनिकता के प्रभाव से लोक कथाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं आज इनके संकलन अन्वेषण पुनर्लेखन और विश्लेषण की आवश्यकता है प्रस्तुत शोध, पत्र का यही उद्देश्य है |

मुख्य शब्द : लोककथाओं, संयोजन, स्त्री चेतना, सुख–दुखों की अभिव्यक्ति

प्रस्तावना:
लोकजीवन में लोककथाओं और लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। लोककथाएँ लोकजीवन की झांकी प्रस्तुत करती हैं, इनमें लोगों के सुख–दुखों की अभिव्यक्ति होती है साथ ही ये मनोरंजन के साथ श्रम का परिहार भी करती हैं। मनुष्य प्रारंभ से ही कल्पनाशील रहा है, अपनी इसी कल्पनाशीलता के कारण वह अपने आसपास की घटनाओं और यथार्थ को लोककथा के रूप में कहता आ रहा है। लोककथाएँ संस्कृति की वाहक होती हैं, वे संस्कृति की अनेकानेक तत्वों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरिक करती है। हस्तांतरण की इस प्रक्रिया में लोककथाओं और गीतों में आंशिक परिवर्तन भी होते हैं। कुछ लोककथाएँ अपने अंचल में ही कही सुनी जाती हैं, कुछ अपने अंचल से निकलकर अन्य क्षेत्रों तक पहुंचती हैं, तो कुछ लोककथाएँ थोड़े परिवर्तन के साथ संसारव्यापी हो जाती हैं। लोककथाओं में लोकगीतों का संयोजन उसे और सरस बना देता है।
लोककथाएँ जीवनाभिमुख होती हैं, इनमें सामाजिक शिक्षा और उपदेश निहित होते हैं जो अप्रत्यक्ष रूप में होते हैं और सहज ग्राहय भी। लोककथाओं को छत्तीसगढ़ के सरगुजांचल में 'कहनी' कहा जाता है। लोककथाओं की अपनी अलग विशेषताएँ होती हैं, इसमें अश्लील श्रृंगार नहीं होता, इनमें लोकमंगल की भावना निहित होती है, इनमें रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता होती हैं, और औतसुक्य होता है, ये वर्णात्मक होती है और इनका अंत सुख और संयोग में होता है।
लोककथाएँ मौखिक परम्परा के रूप में लोकजीवन में प्रचलित होती हैं। सामान्यतः ये लिखित रूप में उपलब्ध नहीं होती, अगर उन्हें लिखित रूप दिया गया होता तो संभव है उसका विकास वहीं अवरूद्ध हो जाता, लेकिन आज जबकि लोकसाहित्य को संरक्षित रखने की आवश्यकता महसूस की जा रही है तो वे शोध का विषय होकर लिपिबद्ध हो रही हैं। लोककथाओं का सृजन करने वाला कोई एक व्यक्ति नहीं होता उसे कहने या सुनाने वाले कई–कई लोग हो सकते हैं। पीढ़ी–दर पीढ़ी हस्तांतरण की प्रक्रिया में लोक कथाकार अपनी ओर से भी कुछ जोड़ता–घटाता चलता है लेकिन इससे कथा का मूल स्वरूप नहीं बदलता। लोककथाओं के लिए कोई शास्त्रीय सिद्धांत नहीं होते, वे अकृत्रित और सहज रूप में स्वतः स्फूर्त होती हैं। इनकी भाषा सरल और सुबोध होती है तथा इनमें स्थानीय बोलियों के शब्दों की बहुलता होती है, अतः वह सहज ही विश्वसनीय और ग्राहय हो जाती है तथा सुनने वाले पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ जाती है।

लोककथा सुनाने व कहने वाले सामान्यतः उस समाज के बुजुर्ग होते हैं, लोककथा कहने वालों में बुजुर्ग स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब दादी या नानी भूत–प्रेतों की , जंगल की, जानवरों की कथा सुनाती हैं तो बच्चे हुँकारी भरते–भरते कब नींद की आगोश में चले जाते हैं और सपनों में उन लोककथाओं का हिस्सा बन जाते हैं, उन्हें पता ही नहीं चलता। जेठ की दुपहरी ग्रामीण अंचल की महिलाएँ भोजन के पश्चात् घर के ओसारे में चटाई बुनती हैं, झाड़ू बनाती हैं, इसी बीच कोई लोककथा चल निकलती है और उस लोककथा के साथ उनका काम भी पूरा हो जाता है।

समाज में नारी सदैव से शोषित– उत्पीड़ित रही है, उसकी यह पीड़ा लोककथाओं में भी व्यक्त होती है। नारी अपना दुख चिड़ियों, पेड़ो, नदियों को और प्रकृति के अन्य उपादानों से साझा करती है, उसकी पीड़ा को लोकगीत अपना स्वर देते प्रतीत होते हैं। " लोक में गीत के माध्यम से हद्धय की बात कहने की परिपाटी सबसे अधिक प्रिय और संप्रेषणीय रही है इसलिए गद्य की बजाए पद्य में, जन मन की बात गाकर जितने अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर सकती है, उतना सीधे–सादे कहकर नहीं कही जा सकती। गीत, मन की सहज प्रवृत्ति है, इसीलिए लोकगीत मनुष्य के हद्धय का स्पंदन है।"[1]

सरगुजांचल की एक लोककथानुसार पांच भाइयों ने मिलकर तीर चलाकर अपनी बहन को मार डाला। मरने के बाद बहन का तुम्बी (गोलाकार लौकी) के रूप में फलना, तत्पश्चात् एक जोगी द्वारा उस तुबी सेवाद्य यंत्र बनाया जाना और जिससे नकिले करूण राग से अपनी दुख कथा सुनाने का वर्णन मिलता है। जोगी भिक्षा मांगते हुए भाइयों के आँगन में भिक्षा के उद्देश्य से जब वाद्य बजाता है तो उससे संगीत के साथ गीत फूट पड़ता है–

जोगी –

बज, बज–बज रे घोघो तुम्बा
मैं तो जोगी गावथों गीत
मैं तो जोगी मांगथों भीख।

प्रत्युत्तर में तम्बूरे से आवाज आती हैं–

झिन बजबे रे घो–घो तुम्बा
ये तो तोर बैरी कर घर
थे तो तोर दुश्मन कर घर।

जब जोगी उस बहन के प्रिय भाई के आँगन में गाता है, तब तम्बूरे से आवाज आती है –

बज, बज–बज रे घोघो तुम्बा
ये तो तोर भइया के घर,
ये तो तोर भइया कर घर.....।

एक अन्य लोककथा में भाई, जुए के खेल में अपनी बहन को दाँव पर लगा देता हैं जुए में हारने के पश्चात् भाई, छलपूर्वक बहन को डोम युवक को सौंपने के उद्देश्य से अपनी बहन को सरोवर से कमल का फूल तोड़ लाने की बात कहता हैं जहाँ डोम युवक पहले से छुपा बैठा होता है। बहन सरोवर के पानी में उतरती है, उसे बहुत डर लगता है, लेकिन वह भाई के खातिर गहरे पानी में उतरने को तैयार हो जाती है। जलस्तर बदला ही जाता है लेकिन फूल उसके हाथ नहीं आता, तब दुखी होकर बहन यह गीत गाती है –

सुपली भर–भर पानी ददा
फूला नहीं लमरे रे, फूला नहीं लमरे
ठेहुना भर–भर पानी ददा.....
छाती भर–भर पानी ददा.....
ढेटू भर–भर पानी ददा.....।

बहन द्वारा पाले गये होते को सारी बातें पता हैं, वह सरोवर के पास आता है और गीत गाकर अपनी पीड़ा व्यक्त करता है –

कहाँ गयले, कहाँ गयले सुन्दर मोर बइनी
चरियों नेवड़ा मूसर मारल हो राम ।

तब सरोवर के भीतर से गीत गाने की आवाज आती है–

फिरी जा हो, फिरी जा हो रवनी हो, सुगनी
भइया हारले, जुआ खेलत हो राम।

इस प्रकार लोक कथाएँ मानवीय संवेदनाओं के साथ प्रकृति के विविध अंगों से जुड़ी हुई है। उसमें सूरज, चाँद , मछली, मेंढ़क , पक्षी, जानवर सभी अभिव्यक्ति पाते हैं।[2]

स्त्री मन की पीड़ा और सौतिया डाह को भी लोक कथाओं में अभिव्यक्ति मिली है। एक लोककथा में राजा को रानी की बड़ी बहन अपने मोह–जाल में फँसाकर अपनी छोटी बहन को नहाते समय तालाब में ढकेल देती है। उसे मरा जानकर स्वयं रानी के कपड़े पहन महल में पहँच जाती है और रानी बनकर रहने लगती है। उधर छोटी बहन किसी तरह तालाब से बच निकलती है और कायांतर कर 'तिरकी' चिड़िया बनकर महल पहुँचती है और गीत के माध्यम से राजा तक अपनी बात पहुँचाना चाहती है, वह गाती है –

तिरकी–तिरकी चाउर बाढ़े
मूसर चाउर चाबे
अइसन राजा भोर करे
डेढ़ सास के कोरा, थूकी रे.....।

पहरेदार ने उस अनोखी चिड़िया को देखा और राजा को बताया। राजा ने चिड़िया को पकड़ने का आदेश दिया लेकिन वे उसे पकड़ न सके। दूसरे दिन चिड़िया फिर आती है लेकिन कड़ा पहरा देखकर ठिठक जाती है। जगह–जगह पहरेदार खड़े हैं हाथी घोड़े बँधे हुए हैं, दरवाजा बंद है तब वह बारी–बारी से हाथी–घोड़े से विनती करती है कि वे उसे महल में जाने दें ताकि वह अपने दुधमुंहे बच्चे को दूध पिला सके, प्यार दे सके। उसके मार्मिक गीत को सुन बेजुबान घोड़े–हाथी यहाँ तक कि निर्जीव दरवाजा भी खुल जाता है–

हटी जा हो, हटी जा हो
सोने सन मोरा हथिया
हरलालू चंदन के दूध पियाल के चलेन।
खुली जा हो, खूली जा हो
सोने केरा बजरी केंवार
हरलालू चंदन.....
दिया बारू, दिया बारू, सोने केरा दिया मोर
हरलालू चंदन.....।[3]

स्त्री उत्पीड़न का वर्णन भारत के सभी क्षेत्रों की लोककथाओं में मिलता है। पूर्वोत्तर की एक लोककथा में सामाजिक रीति–रिवाजों का ठीक–ठीक पालन न करने के कारण नवविवाहिता को पत्थर बनना पड़ता है। पूर्वोत्तर की ही एक लोककथा में बहन जंगल के रास्ते जाते हुए भाइयों के मना करने पर भी उत्सुकतावश पशु–पक्षियों के बारें में, जंगल के बारे में कई–कई प्रश्न करती हैं, तब उसे एक पेड़ से लिपटी लताएँ जकड़ लेती हैं, बहन

भयभीत हो अपने छुड़ाये जाने के लिए करुण गीत गाती है। भाई ,बहन को बचाने की बहुत कोशिश करते हैं लेकिन वे उसे नहीं बचा पाते। लोककथा कहने वाली बुजुर्ग स्त्रियों की पीड़ा जाने अनजाने लोककथाओं में अपनी जगह बना लेती हैं।

लोककथाओं में स्त्री चेतना के साथ उनके सशक्तिकरण का स्वर भी मिलता है, वहाँ स्त्री का स्थान उच्च है, निश्चय ही यह कहा जा सकता है कि स्त्री के स्वाभिमान और चेतना को विस्तार मिलता है। अरूणाचल की लोककथा में दोनी–पोलो (चाँद और सूरज) यहाँ सूरज स्त्री है तो चाँद पुरूष। खासी लोककथा में भी सूर्य, स्त्री मानी गई है तो चन्द्रमा पुरूष। दोनों बहन भाई की तरह रहते हैं लेकिन चाँद दुनिया की सबसे सुन्दर स्त्री सूर्य पर आसक्त हो जाता है, सूर्य उसे समझाती है न मानने पर कटु शब्द भी कहती है कि हम भाई–बहन हैं और तुमने अपनी बहन पर ही बुरी नजर रखी। चाँद फिर भी निर्लजता पर अड़ा रहा तब सूर्य ने चूल्हे से बाल्टी भर राख भरकर अपने भाई के ऊपर उड़ेल दिया, जिससे वह सिर से पाँव तक राख में सराबोर हो गया। अपनी बहन के कटु शब्दों को सुन और उसका प्रचंड क्रोध देखकर चंद्रमा जितनी जल्दी हो सका वहाँ से निकल भागा और ब्राहमांड के काले हिस्से में जाकर छिप गया।[4] उसके पश्चात् अपनी बहन के मार्ग में कभी न आने के लिए वह हमेशा रात को ही बाहर निकलने लगा। इसीलिए हम आज भी चंद्रमा को हमेशा काली रात में ही देखते हैं। उसके चारों ओर राख–सी सफेदी बिखरी रहती है। मान्यता के अनुसार वह वहीं राख है जो सूर्य ने चंद्रमा पर फेंकी थी।

पूर्वांचल की लोककथाओं में मोपिन देवी ने आबोतानी (आदिपुरूष) को खेती करना सिखाया। आबोतानी के चरित्र में पुरूषोचित चंचलता है जिसके कारण वे कई विवाह करते हैं और इस प्रकार स्त्री का शोषण होता है। जीमी आना (गालो) और जीत आना (निशी) जनजाति में स्त्री को सृष्टिकर्ता और अपराजिता के रूप में स्वीकार किया गया है। पूर्वोत्तर के अलावा संपूर्ण भारत की लोककथाओं में एक ओर जहाँ स्त्री शोषण, उत्पीड़न की कथा मिलती है वहीं उसके सशक्त रूप का ही परिचय मिलता है।

हमारी वाचिक परम्परा के रूप में लोककथाओं का विपुल भंडार है, वे हमारी अमूल्य धरोहर हैं। लोककथाओं में आदि सभ्यता और संस्कृति का परिचय मिलता है, इसमें संपूर्ण लोकजीवन मुखरित होता है, उसकी सांगोपांग अभिव्यक्ति होती है। लोककथाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि मनुष्य प्रारंभ से बहुत कल्पनाशील रहा है और लोककथाएँ ही हैं जिन्होंने आधुनिक साहित्य सृजन की पृष्ठभूमि तैयार की। उसने आदि से लेकर अब तक शोषित और उत्पीड़ित स्त्री के स्वर को अभिव्यक्ति दी साथ ही उसकी सशक्तिकरण का भी परिचय दिया। आधुनिक समय में लोककथा कहने और सुनने वालों की संख्या अत्यल्प हो गई है अतः नये शोधों के द्वारा ही उसका सरंक्षण और संवर्धन किया जा सकता है, जिससे आनेवाली पीढ़ियाँ अपने अतीत और गौरवशाली संस्कृति से परिचित हो उसके महत्व को समझकर आनेवाली पीढ़ियों को उसे हस्तांतरित कर सकेंगी।

संदर्भ सूची

1. लोकसंस्कृति–वसन्त निरगुणे–पृ.सं.– 107 –मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी रविन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल (म0प्र0)
2. प्रारंभिक स्रोत – श्रीमती मरियम केरकेट्टा – छिरोपारा (बतौली) सरगुजा (छ0ग0) दिनांक 16.12.2012
3. वही
4. पूर्वोत्तर : आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएँ–संपादन एवं संकलन –संपादक रमणिका गुप्ता–राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत नेहरू भवन–, 5 इंस्टीटयूशनल एरिया– फेज–पप –बसंतकुंज–नई दिल्ली–110070